वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :4 अंक : 14 | गुरुवार 9 मई 2024 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मरीजों को मिलेगी कतारों से मुक्ति, ऑनलाइन होंगी स्वास्थ्य सेवाएं

प्रदेश में विकसित देशों की तर्ज पर लागू होगा इन्टीग्रेटेड हैल्थ मैनेजमेंट सिस्टम

जयपुर. कासं

प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं से लेकर मेडिकल तंत्र को पूरी तरह ऑनलाइन करने के लिए सरकार नया प्रोजेक्ट लेकर आ रही है। विकसित देशों की तर्ज पर स्वास्थ्य सेवाओं और मेडिकल सिस्टम को पूरी तरह ऑनलाइन करने के लिए इन्टीग्रेटेड हैल्थ मैनेजमेंट सिस्टम 2.0 लागू किया जाएगा। नए सिस्टम को लागू करने से पहले विभाग के स्तर पर इसकी तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। स्वास्थ्य विभाग की एसीएस शुभ्रा सिंह ने इन्टीग्रेटेड हैल्थ मैनेजमेंट सिस्टम 2.0 को लेकर रिव्यू बैठक की, इस बैठक में जल्द हर स्तर पर तैयारियां करने को कहा है। शुभ्रा सिंह ने कहा कि आम लोगों को अच्छे इलाज और स्वास्थ्य सेवाओं की क्वालिटी सुधारने के लिए यह विजनरी प्रोजेक्ट है। यह एक अत्याधुनिक हैल्थ मैनेजमेंट सिस्टम होगा, जिससे प्रदेश के मेडिकल सिस्टम में क्रांतिकारी बदलाव आएगा। इससे इलाज मिलना आसान होगा, डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ के सामने भी चुनौतियां कम होंगी।

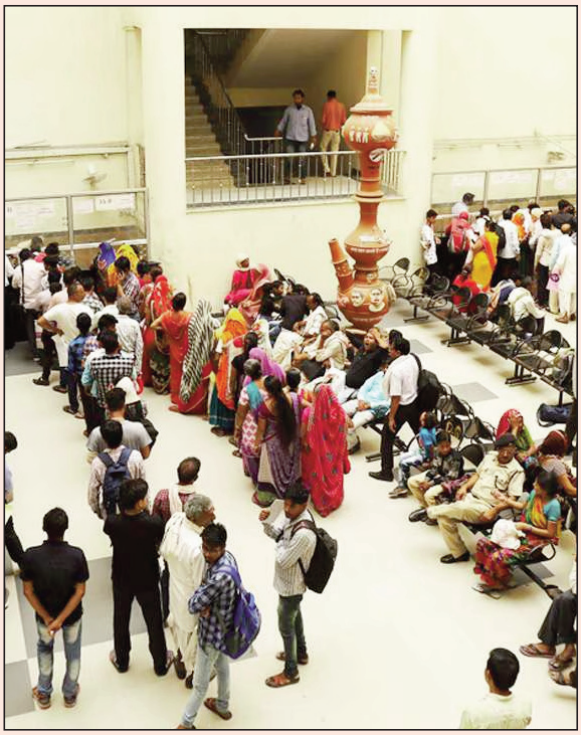

मरीजों को मिलेगी कतारों से मुक्ति, इलेक्ट्रॉनिक हैल्थ रिकॉर्ड बनेगा

इंटीग्रेटेड हेल्थ मैनेजमेंट सिस्टम लागू होने के बाद मरीजों को इलाज के लिए और डॉक्टर को दिखाने के लिए कतारें नहीं लगानी पड़ेंगी। इसके तहत इलेक्ट्रॉनिक हैल्थ रिकॉर्ड, डिजी हैल्थ लॉकर, यूनीफाइड डिजीटल सर्वे, केपीआई आधारित डैशबोर्ड, स्वास्थ्य संबंधी लाइसेंस और एनओसी आदि के लिए सिंगल विंडो सिस्टम लागू किया जाएगा। टेली आईसीयू, जीओ टेगिंग आधारित अस्पताल का मैप जैसी सुविधाएं भी मिलेंगी।

हर सप्ताह होगा प्रोजेक्ट का रिव्यू

एसीएस शुभ्रा सिंह ने नए प्रोजेक्ट को जल्द तैयार करके इसे धरातल पर लाने को कहा है। इस प्रोजेक्ट का हर सप्ताह रिव्यू किया जाएगा।

रोडवेज में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का समापन

जयपुर

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम में सात दिवसीय नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का समापन हुआ। निगम की अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक श्रेया गुहा ने बताया कि 1 से 7 मई तक आयोजित चिकित्सा शिविर में कुल 6602 कार्मिको का हुआ नि:शुल्क स्वास्थ्य परिक्षण किया गया है। उन्होने कार्मिको को चिकित्सकीय परामर्श को मान्य के साथ स्वस्थ्य जीवन शैली को अपनाने के भी निर्देश दिए। उन्होने बताया कि जिन कार्मिकों का स्वास्थ्य परिक्षण नहीं हो पाया है उनके लिए निगम द्वारा आगे भी इसी तरह नियमित रूप से नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाये जाएंगे। उल्लेखनीय है कि निगम के सभी आगारो में आयोजित सात दिवसीय नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में कार्मिकों के नेत्र परीक्षण, ब्लड प्रेशर, डायबिटीज की जॉच कर मौके पर दवाईया उपलब्ध करवायी गई।

'कांग्रेस ने बाबा साहेब अम्बेडकर को उचित सम्मान नहीं दिया'

जयपुर. कासं

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा है कि कांग्रेस ने बाबा साहेब अम्बेडकर को सबसे ज्यादा जलील किया है। कांग्रेस ने कभी उनके बारे में चिंता नहीं की। उन्हें कभी चुनाव लड़ने के लिए टिकट नहीं दिया। जब बाबा साहब ने चुनाव लड़ा तो उन्हें हराने का काम भी कांग्रेस ने किया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को तेलंगाना में चेवेल्ला लोकसभा से बीजेपी प्रत्याशी कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी के समर्थन में राजस्थानियों के साथ 'चाय पर चर्चा' कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा- कांग्रेस के लोग सरदार पटेल को भी भूल गए हैं। इनको केवल एक परिवार याद आता हैं। इन्हें राष्ट्र की नहीं, केवल एक परिवार की चिंता है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तुष्टीकरण की राजनीति करती है। इनके प्रधानमंत्री ने कहा था कि देश के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों का है जबकि हमारे प्रधानमंत्री सबके लिए समान रूप से काम करते हुए दुनिया में देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

मैं प्रवासी राजस्थानियों की ताकत को जानता हूं

सीएम भजनलाल शर्मा ने प्रवासी राजस्थानियों को कहा कि मैं आपकी ताकत को जानता हूं। आप दो से चार, चार से छह करना जानते हैं। आपके यहां 13 मई को मतदान होगा। इस दिन आपको बीजेपी के पक्ष में ज्यादा से ज्यादा वोटिंग करवानी हैं। आपको लोगों से ज्यादा से ज्यादा वोट देने की अपील करनी हैं कि प्रवासी राजस्थानी अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए अपनी वोट की ताकत को पहचानें और लोकसभा सीट से बीजेपी प्रत्याशी कोंडा विश्वेश्वर रेड्डी को भारी मतों से विजयी बनाएं।

राजस्थान विश्वविद्यालय खेल बोर्ड द्वारा ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन 16 मई से 5 जून 2024 तक

जयपुर. शाबाश इंडिया

आरयू की पहलः राजस्थान विश्वविद्यालय खेल बोर्ड द्वारा पहली बार ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन 16 मई से 5 जून 2024 तक होगा। खेल बोर्ड राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वारा पहली बार खेल बोर्ड परिसर में विभिन्न खेलों के लिये ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रो. अल्पना कटेजा ने अधिक से अधिक प्रतिभागिता हेतु युवाओं का आह्वान किया एवं कहा की आज का युवा ही स्वस्थ एवं समृद्ध भारत का भविष्य है। इस ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर के आयोजन की पहल खेल बोर्ड, सचिव डॉ. प्रीति शर्मा द्वारा की जा रही है। जिसके आयोजन द्वारा विश्वविद्यालय अपनी सामाजिक दायित्व को निर्वहन करनें की तरफ एक उन्मुक्त कदम बढा रहा है। इस अवसर पर खेल बोर्ड सचिव, डॉ. प्रीति शर्मा, सहा.निदेशक शारीरिक शिक्षा डॉ.शैलेष मौर्य, सुरेन्द्र मीणा,प्रभु दयाल बेनीवाल उपस्थित रहे। डॉ प्रीति सचिव खेल बोर्ड ने बताया की खेल बोर्ड, राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा निम्नलिखित खेलों और खेल गतिविधियों में 07 से अधिक वर्ष की आयु वर्ग के इच्छुक छात्रो, खिलाडियों तथा अन्य सभी वर्ग के लिये ग्रीष्मकालीन शिविर का आयोजन 16 मई से 05 जून 2024 तक किया जायेगा। इस ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर को विशेष रूप से तैयार किया गया है। जिससे खेलो इण्डिया,फिट इण्डिया जैसे खेल कार्यक्रमों को बढावा देने के साथ-साथ बच्चों को खेलों की तरफ आकर्षित करने और उनको उच्च स्तरीय क्रीडा प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। इस प्रशिक्षण शिविर में बच्चो के अलावा किशोरों व वरिष्ठ नागरिकों की शारीरिक फिटनेस और मनोरंजन को ध्यान में रखकर क्रियान्वित किया गया है। यह ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर बच्चों, व्यस्कों में अनुशासन, शारीरिक फिटनेस, सामाजिक कौशल, नेतृत्व कौशल, आत्मविश्वास, जैसे गुणो को विकसित करने में सहायक होगा। विद्यार्थियों के पर्सनेलिटी डेवलपमेंट के लिए एरोबिक्स,योगा,फिटनेस एक्टिविटी भी इसमें शामिल सकारात्मक सोच व पर्सनेलिटी डेवलपमेंट के लिए योगा और एरोबिक्स एक्टिविटी को जोड़ा है। इससे विद्यार्थियों का व्यतीव विकास होगा साथ ही अध्ययन में एकाग्रता बढ़ेगी। सचिव ने बताया की ग्रीष्मकालीन शिविर की विस्तृत सूचना राजस्थान विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध होगी। शिविर के लिये खेल बोर्ड द्वारा गूगल फार्म में ऑनलाईन आवेदन पत्र मांगे गये है। जिसे विश्वविद्यायल की वेबसाईट पर जाकर ऑनलाईन लिंक के माध्यम से भरकर उसकी हार्डकॉपी खेल बोर्ड कार्यालय में जमा करानी होगी। शिविर के लिये प्रत्येक खेल का पंजीकरण शुल्क 100/- रुपए होगा एवं खेल सुविधा शुल्क विश्वविद्यालय विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारीगणों एवं उनके आश्रितों के लिये 600/- एंव विश्वविद्यालय के बाहरी सदस्यों के लिये 1200/- होगा।

''जियो और जीने दो की प्रासंगिकता वर्तमान समय में'' पर विशेष सर्वधर्म सभा का आयोजन

शाबाश इंडिया। बुधवार को बड़ा धड़ा पंचायत नसिया में आचार्य सुनील सागर जी महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से एक विशेष धर्म सभा का आयोजन किया गया जिसमें सभी धर्म के प्रमुख व्यक्तियों ने अपनी सहभागिता दी सर्वधर्म मैत्री संघ के अध्यक्ष प्रकाश जैन ने बताया कि आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज ने केवल अध्यात्म में अपितु समाज के विकास में महान आत्माओं की जीवन शैली को बताकर आमजन को प्रोत्साहित करते हैं कार्यक्रम का आयोजन *दिगंबर जैन महासमिति के सदस्यों के द्वारा किया गया कार्यक्रम के प्रारंभ में सभी आमंत्रित अतिथियों का दुपट्टा माल्या अर्पण के द्वारा अभिनंदन किया गया प्रथम वक्ता के रूप में पंडित सुदामा शर्मा ने जियो और जीने दो की प्रासंगिकता को बताते हुए भगवान महावीर के अन्य संदेशों पर भी जोर देते हुए कहा कि जैन धर्म अनुशासन सिखलाता है बोहरा मस्जिद के मोहम्मद अली बोहरा ने भगवान महावीर के अपरिग्रह वाद की बात करते हुए जैन धर्म की विशेषताओं की व्याख्या की उन्होंने मोहम्मद साहब का उत्कृष्ट उदाहरण भी पेश किया गंज गुरुद्वारा की सरदार दिलीप सिंह छाबड़ा ने गुरु ग्रंथ साहब का हवाला देते हुए बताया कि इंसान सभी जैसे हैं कोई छोटा कोई बड़ा नहीं है सबको जी संसार में जीने का हक है फादर अजय ने बताया कि प्रभु यीशु मसीह ने क्षमा धर्म को अपनाया जो कि जैन सिद्धांत में मूल सिद्धांत आता है क्षमा का पर्व जिस प्रकार से जैन धर्म में मनाया जाता है अन्य किसी भी धर्म में नहीं बौद्ध धर्म के जी सी बेरवाल जी ने कहा कि भारत की दो प्रमुख संस्कृतियों श्रवण संस्कृतियों के नाम से जानी जाती है बौद्ध संस्कृति एवं जैन संस्कृति दोनों में ही बहुत सी समानताएं हैं।

तीर्थंकर आदिनाथ का 13 माह निराहार के बाद प्रथम आहार का दिन अक्षय तृतीया त्योहार

अक्षीण समृद्धि प्राप्ति का अवसर

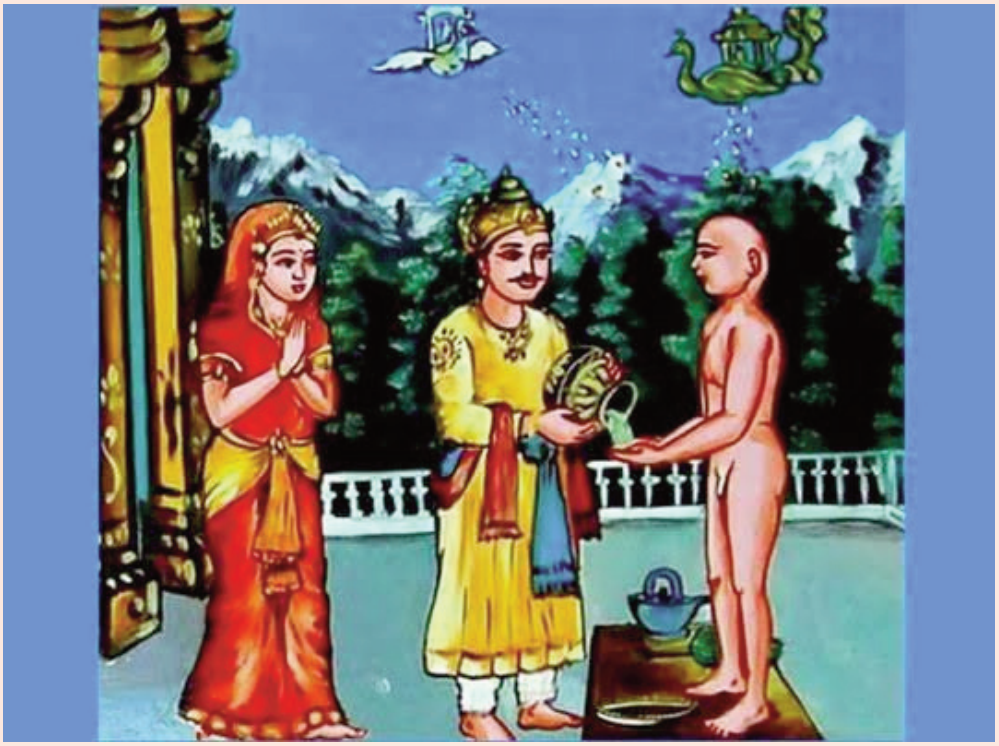

भारतीय संस्कृति में बैसाख शुक्ल तृतीया का बहुत बड़ा महत्व है, इसे सामान्य बोलचाल में आखा तीज या अक्षय तृतीया भी कहा जाता है। जैन धर्म में इसे श्रमण संस्कृति के साथ युग का प्रारंभ माना जाता है। हुंडावसर्पिणी के तृतीय काल में अयोध्या में राजा नाभीराज एवं रानी मरूदेवी का राज्य था। उनके एक पुत्र ऋषभनाथ का जन्म हुआ। युवा अवस्था में उनकी गतिविधियों के देखकर, योग्य जानकर अयोध्या का राजपाट ऋषभनाथ को दे दिया। इन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है। तीर्थंकर आदिनाथ को इस युग के निमार्ता के रूप में जाना जाता हैं। उस समय मनुष्य भोगभूमि का जीवन जी रहे थे, मनुष्य की सभी आवश्यकताएं कल्पवृक्ष से पूरी हो जाया करती थी। लेकिन धीरे-धीरे कल्पवृक्ष की शक्तियां कम होती गईं। भोगभूमि की रचना मिटने लगी और कर्मभूमि की रचना प्रारंभ हो रही थी। उस समय वर्षा होने से खेतों में अपने आप तरह-तरह के धान्य, वृक्षों के अंकुर उत्पन्न होकर समय पर योग्य फल देने वाले हो गए थे। लेकिन ये एक बार पैदा होकर नष्ट हो गए थे। खाने पीने की समस्या उत्पन्न हो गई थी। भोगभूमि बिल्कुल मिट चुकी थी और कर्म युग का प्रारंभ हो गया था, परंतु लोग कर्म करना जानते नहीं थे इसलिए वे भूख प्यास से दुखी होने लगे। इसके बाद भगवान आदिनाथ ने ही मानव जाति को आवश्यक ज्ञान दिया। उन्होंने मनुष्य को जीवन जीने के लिए छः कार्य सिखाए।

असि- रक्षा करने के लिए अर्थात सैनिक कर्म
मसि- लिखने का कार्य अर्थात लेखन
कृषि- खेती करना और अन्न उगाना
विद्या- ज्ञान प्राप्त करने से संबंधित कर्म
वाणिज्य- व्यापार से संबंधित
शिल्प- मूर्तियों, नक्काशियों, भवनों इत्यादि का निर्माण।

तीर्थंकर आदिनाथ ने ही लोगों को सुनियोजित तरीके से सभी तरह के कार्य करना सिखाया था। इसी तरह अपनी सुपुत्रियों ब्राह्मी को 'लिपि विद्या' एवं सुंदरी को 'अंक विद्या' का ज्ञान कराकर, इन विद्याओं को आम जन में प्रसारित करवाया। मनुष्य को मूलभूत आवश्यकताओं को सिखाने का श्रेय भगवान आदिनाथ को जाता है। उन्होंने प्रथम बार अपनी नगरी अयोध्या में शासन-व्यवस्था, नियम-सिद्धांत, अधिकार-कर्तव्य इत्यादि की स्थापना की थी। इसके बाद सब कुछ नियमों के अनुसार चलने लगा तथा धर्म की स्थापना हुई। जैन धर्म के अनुसार इस तरह भरत क्षेत्र में युग का परिवर्तन भोग भूमि से कर्मभूमि के रूप में हुआ। एक दिन दरबार में नर्तकी नीलांजना की नृत्य के दौरान मृत्यु होने से जब आदिनाथ को जीवन से वैराग्य हो गया तो उन्होंने जैन धर्म की दीक्षा ली तथा छः महीने का उपवास लेकर तपस्या की। छः माह बाद जब उनकी तपस्या पूरी हुई, तब भी उनके शरीर को भूख प्यास की पीड़ा नहीं थी। लेकिन वे आहार को निकले ताकि आने वाले समय में श्रावकों द्वारा मुनिराजों को आहार हेतु पड़गाहन आदि विधि एवं मुनिराजों द्वारा आगमानुसार आहारचर्या का पालन कर सकें। ऋषभदेव जी के त्याग को देखते हुए उनके साथ कई राजा व प्रजा के लोग भी आये थे जिन्होंने सन्यास ले लिया था। इसमें उनके पुत्र व प्रपोत्र भी थे। चूँकि वह पहले तीर्थंकर थे, इसलिए लोगों को यह नही पता था कि उन्हें आहार किस विधि से दे, आहार में क्या दे एवं इसलिए वे उन्हें आभूषण, हीरे-मोती इत्यादि बहुमूल्य वस्तुएं दिया करते थे, ना कि भोजन। लेकिन छः माह पश्चात भी आहार विधि नहीं मिली तो उनके साथ के लोगों में व्याकुलता होने लगी और वे भूख-प्यास से बेहाल होने लगे। तब उनमे से कईयों ने जैन धर्म में से कई अन्य मतों/ संप्रदायों की शुरूआत की। इसी तरह भगवान आदिनाथ को बिना आहार ग्रहण किए हुए 13 माह से अधिक, यानी 398 दिन हो गए थे। एक दिन वे भ्रमण करते हुए हस्तिनापुर पहुंचे। वहाँ राजा सोमप्रभ एवं युवराज श्रेयांस कुमार दोनो भाई दौड़कर मुनि ऋषभनाथ के पास आए। ऋषभनाथजी को देखते ही श्रेयांस कुमार को जातिस्मरण हो गया एवं पूर्वभव में दिगंबर मुनि को दिए गए आहार का दृश्य सामने आ गया। प्रातःकाल का समय था। ऋषभनाथ का नवधाभक्ति सहित पड़गाहन के साथ श्रेयांस कुमार ने राजा सोमप्रभ एवं रानी लक्ष्मीमती के साथ आहार करवाया। प्रथम आहार के रूप में इक्षुरस का पान कराया। उन्होंने लगभग 13 माह से अधिक समय के बाद कुछ ग्रहण किया था, इसलिए इस दिन का महत्व बढ़ गया था। यह दिन वैशाख शुक्ल तृतीया थी जिसे आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाया जाता है। प्रथम तीर्थंकर की प्रथम आहारचर्या तथा प्रथम दानतीर्थ प्रवर्तन की सूचना मिलते ही देवों ने तथा भरतचक्रवर्ती सहित समस्त राजाओं ने भी श्रेयांसकुमार का अतिशय सम्मान किया। भरत क्षेत्र में इसी दिन से आहारदान देने की प्रथा का शुभारम्भ हुआ। पूर्वभव का स्मरण कर राजा श्रेयांस ने जो दानरूपी धर्म की विधि संसार को बताई उसे दान का प्रत्यक्ष फल देखने वाले भरत आदि राजाओं ने बहुत श्रद्धा के साथ श्रवण किया। लोक में श्रेयांस कुमार ''दानतीर्थ प्रवर्तक' की उपाधि से विख्यात हुए। जिन धर्म के अनुयायियों के लिए यह त्योहार बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। इस दिन को विभिन्न प्रकार से मनाया जाता है। लोग अक्षय तृतीया के दिन दान करते हैं और धर्मिक क्रियाएँ करते हैं। यह एक शुभ दिन माना जाता है जिसमें किया गया दान और कर्म अनन्त फल देते हैं।

संकलनः भागचंद जैन-अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर

मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज का दमोह में हुआ भव्य प्रवेश

विशाल शोभायात्रा के साथ स्थान स्थान पर हुआ पाद प्रक्षालन, आज हमारे संघ के अग्रज निर्यापकश्रमण दय का हम दीक्षा महोत्सव मना रहे हैं: मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

दमोह. शाबाश इंडिया। आज मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री वरिष्ठ सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी महाराज ससंघ का आज दमोह नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ जहां नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया था स्थान स्थान पर भक्तों

के समूह गुरुदेव की अगवानी करने पलक पांवड़े बिछाए खड़े थे मुनि संघ को मुख्य जिनालय में प्रवेश कराया गया जहां धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने कहा कि कोई भी कार्य होता है कार्य एक व्यक्ति करता है लाभ बहुतो को मिलता है। दीपक एक होता है लेकिन ना जाने कितने लोगों की आंखों के अंधेरे को दूर कर देता है प्रकृति के द्वारा ऐसे कुछ सिद्धांत वनाये गये है कि शुभ कार्य कोई एक व्यक्ति करता है और उसकी अनुमोदन करके सैकड़ों लोग पुण्य अर्जित कर लेते हैं कोई भी कार्य प्रशंसनीय इसलिए नहीं है कि आप ने किया है प्रशंसनीय तव होगा जव उससे बहुत सारे लोगों को लाभ हुआ हो अमावस्या को दीक्षा महोत्सव के रूप में मना रहे हैं भगवान को मोक्ष हुआ उनको लाभ हुआ और दीक्षा दिवस मना कर आज तक लाभ ले रहे हैं आज हमने अच्छा कार्य किया है लाभ कितनों को लाभ मिला।

वेद ज्ञान

समय का सदुपयोग बेहद जरूरी

हर एक व्यक्ति के पास दिन में मात्र चौबीस घंटे का समय होता है जिसमें उसे अपने सारे कार्य संपन्न करने होते हैं। हम अपने समय का अधिकाधिक उपयोग कर सकें इसके लिए समय प्रबंधन आवश्यक है। हालांकि कुछ लोग समय के वर्गीकरण को ही समय प्रबंधन मानने की भूल करते हैं, लेकिन समय के वर्गीकरण की अपेक्षा समय का सदुपयोग अधिक जरूरी है। यदि हम समय का सदुपयोग करना सीख जाएं तो जीवन में बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। बहुत सारे ऐसे लोग भी रहे हैं जिन्हें समय प्रबंधन की जानकारी नहीं थी, लेकिन वे जीवन भर केवल उपयोगी कार्यों को करने में ही लगे रहे और उन्होंने अपने जीवन में आशातीत सफलता भी प्राप्त की। वास्तव में हम जो कार्य करते हैं उसके मूल में हमारी इच्छाएं ही होती हैं। यदि हमारी इच्छाएं महान हैं, सात्विक हैं तो कार्य भी महान और सात्विक ही होंगे। यह सच है कि हमारी इच्छाएं भी हमारे विचारों का परिणाम होती हैं। इस प्रकार से हमारे विचार ही हमारे कार्य के स्वरूप को निश्चित और निर्धारित करते हैं, उसे आकार प्रदान करते हैं। हमारे सपनों के अनुरूप ही सफलता हमें मिल पाती हैं। कई बार हमारी अपेक्षाएं अथवा हमारे सपने बहुत बड़े होते हैं और हम उन्हें पूर्ण भी कर लेते हैं, लेकिन फिर भी जीवन में संतुष्टि नहीं मिल पाती है अथवा हम उस सफलता से लाभांवित नहीं हो पाते हैं। इसका अर्थ यही है कि हमने समय का भरपूर इस्तेमाल तो किया, लेकिन प्राप्त उपलब्धियों में संतुलन का अभाव रहा। इस असंतुलन के मूल में है इच्छाओं, अपेक्षाओं अथवा विचारों के सही प्रबंधन का अभाव। जब तक विचारों का सही प्रबंधन नहीं होता तब तक प्राप्त उपलब्धियों में संतुलन हो ही नहीं सकता। यदि हमारी इच्छा खूब धन पाने की है तो जब तक धन को सही तरीके से कमाने और प्राप्त धन के सही तरीके से उपयोग की इच्छा अथवा अपेक्षा नहीं करेंगे वह धन हमारे लिए समस्या बनकर रह जाता है। उसके दुरुपयोग की संभावना बढ़ जाती है। इस स्थिति से बचने के लिए ही विचारों का उत्तम प्रबंधन अनिवार्य है। विचारों के सही प्रबंधन द्वारा ही हम सफल, समृद्ध और ऐश्वर्यशाली बन सकते हैं, इन्हें ईमानदारी से हासिल कर सकते हैं और प्राप्त सफलता, समृद्धि और ऐश्वर्य का सार्थक सदुपयोग भी कर सकते हैं।

संपादकीय

विश्वस्तरीय शिक्षा क्यों नहीं दे पाते हैं?

पिछले महीने कई मीडिया-प्रकाशनों ने 2024 की ''क्वाक्वेरेली साइमंड्स (क्यूएस) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग बाय सब्जेक्ट'' का जश्न मनाया। यह बहुत प्रतिष्ठित रैंकिंग है। इस बार इसमें 69 भारतीय विश्वविद्यालयों को भी शामिल किया गया है, जो कि 2023 की तुलना में 19.4 फीसदी का सुधार है। भारत अब धीरे-धीरे चीन, अमेरिका और ब्रिटेन के बाद वैश्विक अनुसंधान में चौथा सबसे बड़ा योगदानकर्ता देश भी बन गया है।

इसके बावजूद पिछले वर्ष हमारे लगभग 8 लाख छात्रों को विदेशी विश्वविद्यालयों की ओर पलायन करना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप 3 अरब डॉलर की भारतीय मुद्रा का आउटफ्लो हुआ है। नौकरियों की किल्लत की बात तो रहने ही दें, लेकिन सरकार भी शिक्षा पर जीडीपी का 6% खर्च करने का वादा करके इसका केवल आधा ही खर्च कर रही है। शहरों की सीमा से लगे राजमार्गों के दोनों ओर देखें तो आप पाएंगे कि वहां निजी कॉलेज फैले हुए हैं, जिन्हें बड़े व्यापारिक घरानों और राजनीतिक नेतृत्व का संरक्षण प्राप्त है। लेकिन उनमें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर श्रेष्ठ नहीं है। देश में शैक्षिक सेवाओं से मुनाफा कमाने को कानूनी रूप से प्रतिबंधित किया गया है, इसके बावजूद वे मुनाफा कमाने के लिए टैक्स-कानूनों को दरकिनार करते हैं। देश के 40,000 से अधिक ऐसे कॉलेज बेरोजगारों की फौज पैदा कर रहे हैं, जो वर्तमान की नॉलेज और टेक्नोलॉजी-केंद्रित अर्थव्यवस्था में सर्वाइव नहीं कर पाते। यहां तक कि उच्च रैंकिंग वाले भारतीय विश्वविद्यालयों में भी अच्छे विद्यार्थी होने का एकमात्र मार्कर उसकी प्रवेश-परीक्षा में उत्तीर्ण होने की क्षमता को ही माना जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों, गुणवत्तापूर्ण इंटर्नशिप, रिसर्च को फंडिंग, अंतर-अनुशासनात्मक पाठ्यक्रमों आदि की कमी है। शिक्षकों के लिए सीमित प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं। आईआईटी जैसे संस्थानों में भी उच्च शिक्षा का उद्देश्य अपने संभावित नियोक्ताओं के सामने कड़ी मेहनत करने और कठिन प्रवेश परीक्षा पास करने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित करना भर ही है। इन समस्याओं के कमजोर समाधान के रूप में, यूजीसी ने विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए भारतीय कैम्पस के दरवाजे खोल दिए हैं। लेकिन अगर कोई शीर्ष विश्वविद्यालय कहता हो कि हार्वर्ड ने हमारे लिए अपने दरवाजे खोलने का फैसला किया है तो क्या वह अपने संसाधनों के बावजूद उससे मेल कर सकेगा? एक अच्छे विश्वविद्यालय के लिए धन और जगह से ज्यादा एक सोशियो इकोसिस्टम (सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र) की आवश्यकता होती है, ताकि उसके प्रोफेसरों और छात्रों का उनके अनुरूप विकास होता रहे। विभिन्न कॉन्फ्रेंस, सभाएं, थिंक टैंक, सामाजिक मानसिकता और विचारों की स्वतंत्रता से वो फलते-फूलते हैं। समस्या यह है कि परिणाम चाहे कितने भी उत्साहवर्धक क्यों न हों, स्टैनफोर्ड या हार्वर्ड की तर्ज पर बनाया गया कोई भी विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में उनके सैकड़ों स्थान नीचे की जगह बना पाता है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

कम नहीं हो रही मुश्किलें

अब दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल नए मामले में फंसते नजर आ रहे हैं। उपराज्यपाल ने गृह मंत्रालय को चिट्ठी लिखकर उनके खिलाफ खालिस्तान समर्थक चरमपंथी संगठन से पैसा लेने के मामले में राष्ट्रीय जांच एजंसी से जांच कराने की सिफारिश की है। यह सिफारिश एक व्यक्ति की सप्रमाण शिकायत पर की गई है। उस शिकायत में कहा गया है कि अरविंद केजरीवाल ने चरमपंथी संगठन ''सिख फार जस्टिस'' के सदस्यों के साथ बैठक की थी, जिसमें तय हुआ था कि वे एक करोड़ साठ लाख डालर के बदले 1993 दिल्ली बम धमाकों के आरोपी देवेंदर पाल भुल्लर की रिहाई में मदद करेंगे। अरविंद केजरीवाल के सहयोगी रहे एक व्यक्ति ने दस वर्ष पहले इस बैठक की तस्वीर भी सोशल मीडिया पर साझा की थी। उसी व्यक्ति की शिकायत पर उपराज्यपाल ने जांच की सिफारिश की है। अरविंद केजरीवाल पहले ही कथित शराब घोटाले में धनशोधन मामले में जेल हैं। उस गिरफ्तारी को सर्वोच्च न्यायालय में गैरकानूनी ठहराने की कानूनी जद्दोजहद चल रही है। अगर राष्ट्रीय जांच एजंसी नए मामले की जांच शुरू करती है, तो केजरीवाल की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। हालांकि अभी तक उन्होंने मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा नहीं दिया है। नए मामले में उपराज्यपाल की सिफारिश के बाद आम आदमी पार्टी ने विरोध प्रदर्शन किया है। उसका कहना है कि मुख्यमंत्री के जेल में रहने से दिल्ली की व्यवस्था पहले ही चरमरा गई है। मगर उपराज्यपाल और केंद्र सरकार को इसकी चिंता नहीं है। वे उन्हें किसी न किसी तरह जेल में डाले रखना चाहते हैं। हालांकि सिख फार जस्टिस से पैसा लेने का आरोप केजरीवाल पर पहली बार नहीं लगा है। चार वर्ष पहले दिल्ली विधानसभा चुनाव के वक्त भी यही आरोप लगा था। तब भाजपा ने खूब शोर मचाया था, मगर दिल्ली के लोगों ने उसको गंभीरता से नहीं लिया और आम आदमी पार्टी को प्रचंड बहुमत से जिताया था। फिर यही आरोप दो वर्ष पहले पंजाब विधानसभा चुनाव में भी लगा था। तब अरविंद केजरीवाल के करीबी रहे कुमार विश्वास ने यह आरोप लगाया था। मगर वहां भी इसका असर नहीं हुआ। विचित्र संयोग है कि इस बार जब यह मामला उठा है, तब लोकसभा के चुनाव चल रहे हैं। इससे आम आदमी पार्टी को फिर यह कहने का मौका मिल गया है कि दरअसल, यह भाजपा का रचा सियासी फंदा है, जिसमें वह केजरीवाल को फंसाना चाहती है। मगर इस बार केवल जनता की अदालत में सफाई देने से काम नहीं चलेगा। एनआइए जांच में केजरीवाल अपने पक्ष में सबूत पेश करने होंगे। दिल्ली में आम आदमी पार्टी सरकार और उपराज्यपाल की तनातनी कोई नई नहीं है। कथित शराब घोटाले की जांच की सिफारिश भी उपराज्यपाल ने ही की थी, जिसके दायरे में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, संजय सिंह और अन्य कई लोग आए। हालांकि संजय सिंह को जमानत मिल गई और अरविंद केजरीवाल को लेकर भी अदालत का रुख कुछ सकारात्मक ही नजर आ रहा है। ऐसे में पूछा जा रहा है कि उपराज्यपाल ने कहीं एक नया फंदा तो नहीं बनाया है। जो हो, अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी लगातार खुद को कट्टर ईमानदार और पारदर्शी बताते रहे हैं।

सरकारी नौकरियां बनाम निजी नौकरियां-एक तुलना

विजय गर्ग

सरकारी क्षेत्र बनाम निजी क्षेत्र की तुलना एक बहस का विषय है जो कभी न खत्म होने वाला विषय प्रतीत होता है। प्रशासन के इन दोनों रूपों में से किसी एक के पक्ष में खड़ा होना बहुत मुश्किल है क्योंकि दोनों के अपने-अपने फायदे और कुछ सीमाएँ हैं। इस भ्रम के पीछे का कारण अज्ञात नहीं है, लेकिन बहुत स्पष्ट है, क्योंकि दोनों अलग-अलग तरीकों से दायरे प्रदान करते हैं और उनकी अपनी सीमाएं हैं। किसी विशेष क्षेत्र में नौकरी से संतुष्टि इस बात पर निर्भर करती है कि कोई व्यक्ति अपनी नौकरी से कितना संतुष्ट है और इन दोनों के लिए अलग-अलग लोगों के अलग-अलग विचार होते हैं। हमारे देश में शुरू से ही सरकारी नौकरियों की सबसे अधिक मांग रही है और ज्यादातर लोग प्राइवेट नौकरी में अपने करियर को जोखिम में डालने के बजाय सरकारी नौकरी करना पसंद करते हैं। जैसे-जैसे समय बीतता गया, आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के साथ कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हमारे देश में प्रवेश किया है जो अन्य भत्तों के साथ-साथ आकर्षक पैकेज भी प्रदान करती हैं और इस प्रकार युवाओं को लुभाती हैं जो कभी-कभी अपनी सरकारी नौकरी छोड़कर ऐसी कंपनियों में प्रवेश कर जाते हैं। कुछ साल पहले, जब हमारे माता-पिता कॉलेजों से पास हुए थे, उस समय उनके लिए ज्यादा विकल्प नहीं थे और अपनी योग्यता के आधार पर सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन करना ही एकमात्र विकल्प था। और वर्तमान समय में परिदृश्य में बदलाव आ रहा है, आज हमें सरकारी नौकरियों के अलावा भी कई अवसर मिल सकते हैं। आम तौर पर सरकारी नौकरियों में राज्य सरकार, नगर निगम सरकार और केंद्र की नौकरियां शामिल होती हैं। सरकारी बैंकों, पब्लिक स्कूलों, प्रशासन आदि में नौकरियाँ सरकारी नौकरियों का हिस्सा हैं। और निजी नौकरियों में आम तौर पर गैर सरकारी संगठन, बहुराष्ट्रीय कंपनियां, आईटी क्षेत्र और आईटीई और एकमात्र मालिक कंपनियां शामिल हैं। ये नौकरियाँ कैसे प्राप्त करें? दोनों प्रकार की नौकरियों में बहुत अंतर है जो या तो वेतनमान, कार्य वातावरण या किसी अन्य रूप में हो सकता है। अन्य सभी क्षेत्रों की तरह इन दोनों नौकरियों के लिए भी आवेदन प्रक्रिया के आधार पर अंतर हैं। सरकारी नौकरी सरकार के लिए आवेदन करने वालों को कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। आमतौर पर, सरकारी नौकरियों के लिए आवेदन पत्रों में जारी होने की तारीख निश्चित होती है, और ये उम्मीदवार के लिए आवेदन करने के लिए एक विशिष्ट समय अवधि के साथ आते हैं। इसलिए सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार को इन तारीखों को ध्यान में रखना होगा। आम तौर पर, सरकारी नौकरी पाना थोड़ा कठिन होता है, क्योंकि किसी विशेष रिक्ति के लिए कई उम्मीदवार आवेदन करते हैं, और आमतौर पर ये नौकरियां अखिल भारतीय स्तर पर खुली होती हैं, और पूरे देश से उम्मीदवार आवेदन करते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा कठिन हो जाती है। इसलिए उन परीक्षाओं की अच्छी तैयारी की जरूरत है। सरकारी नौकरी श्रेणी में आईएएस, बैंकिंग, राज्य सेवा और यूपीएससी की नौकरियां बहुत लोकप्रिय हैं और बहुत से उम्मीदवार इन परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के लिए पूरे वर्ष अध्ययन करते हैं और प्रतियोगिता काफी कठिन होती है। उन परीक्षाओं को पास करने के लिए उम्मीदवारों को नियमित रूप से अध्ययन करने और बुनियादी सामान्य ज्ञान, करंट अफेयर्स और तर्क कौशल आदि से खुद को अपडेट रखने की आवश्यकता है। और एक बार जब कोई उम्मीदवार लिखित परीक्षा पास कर लेता है, तो उसे एक स्क्रीनिंग साक्षात्कार से गुजरना पड़ता है जो नौकरी पाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सरकारी नौकरी का मुख्य लाभ नौकरी की सुरक्षा को माना जा सकता है। मूल रूप से, किसी सरकार में, यदि आप अपना काम अच्छी तरह से कर रहे हैं, तो आपको किसी सहकर्मी या वरिष्ठ के साथ कुछ छोटे-मोटे मुद्दों के कारण

विजय गर्ग
शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

अपनी नौकरी खोने का कोई डर नहीं है, और इसमें पेंशन का अतिरिक्त लाभ भी शामिल है और कई छुट्टियाँ. लेकिन यह एक सच्चाई है कि कार्य संरचना और कार्यसूची जनता के बीच हैसेक्टर थोड़ा सुस्त रहेगा। अगर आप बार-बार बदलाव पसंद करने वाले व्यक्ति हैं तो सरकारी नौकरी आपके लिए उबाऊ हो सकती है। आम तौर पर, लोग अधिक पेशेवर नहीं होते हैं क्योंकि नौकरी की सुरक्षा का कारक हमेशा उनके दिमाग में रहता है। इसलिए सरकारी कार्यालयों में आलस्य का माहौल है जो बहुत उबाऊ साबित हो सकता है। प्राइवेट नौकरी चूंकि निजी क्षेत्र जनता के लिए हर तरह से बिल्कुल अलग है, इसलिए अंतर निजी क्षेत्र की नौकरियों के लिए चयन प्रक्रिया में भी है। निजी क्षेत्र में प्रवेश करना, निजी क्षेत्र में नौकरी पाने का एक वास्तविक पेशेवर तरीका है। ऐसे कोई परीक्षा फॉर्म नहीं हैं जिन्हें चयन प्रक्रिया में शामिल होने से पहले भरने की आवश्यकता हो। यहां आपको हर समय परीक्षा नहीं देनी पड़ती है, लेकिन हां अगर यह ऑन-कैंपस जॉब इंटरव्यू है, तो आपको एक परीक्षा और समूह चर्चा से गुजरना होगा। अधिकांश कंपनियां स्नातकों की भर्ती करती हैं और उनके रवैये, तकनीकी कौशल और कार्य करने की क्षमता की जांच करती हैं। आमतौर पर निजी क्षेत्र की चयन प्रक्रिया सरकारी प्रक्रिया की तुलना में बहुत तेज होती है, जिसके परिणाम घोषित होने में कई महीने लग जाते हैं, यहां अवसर भी बहुत बड़ा है। नौकरी न मिलने तक लोग हर दिन साक्षात्कार की तलाश कर सकते हैं। निजी क्षेत्र में, सब कुछ एक व्यक्ति के प्रदर्शन के आधार पर चलता है, जब तक आपके पास नौकरी की मांग नहीं होती है और प्रदर्शन स्तर से बाहर होने पर आपको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। ऐसी भी संभावना है कि जब मांग कम हो या कंपनी गंभीर घाटे में हो तो आप निजी क्षेत्र की नौकरी खो सकते हैं। यहां प्रतिस्पर्धा भी बहुत है और प्रतिभा भी मौजूद है, इसलिए प्राइवेट सेक्टर की नौकरी बरकरार रखने के लिए आपको अपने कौशल से हमेशा अपडेट रहना होगा और आपकी ग्रोथ भी आपके प्रदर्शन पर निर्भर करती है। निर्णय लेने के लिए उल्लेखनीय बिंदु असमंजस में हैं कि किस रास्ते पर जाएं? आपको तैयारी शुरू करने से पहले अच्छी तरह से अपना मन बना लेना होगा, क्योंकि दोनों की तैयारी प्रक्रिया वास्तव में एक दूसरे से अलग है। अपनी तैयारी शुरू करने से पहले यह तय कर लें कि आप अपने जीवन में क्या चाहते हैं, पैसा या आराम (विश्राम) अगर आपका जवाब पैसा है तो निजी क्षेत्र में जाएं और यदि आप एक स्थिर करियर चाहते हैं तो सरकारी नौकरी सबसे अच्छा विकल्प है। कुछ अन्य बिंदु भी हैं जिनका आपको ध्यान रखना होगाः यह तय कर लें कि आप कुछ सालों बाद खुद को कहां देखना चाहते हैं, अगर आप महत्वाकांक्षी हैं और जीवन की सीढ़ियां तेजी से चढ़ना चाहते हैं तो सरकारी नौकरी आपके बस की बात नहीं है। यदि आप तेजी से सीखते हैं और विकास आपका जुनून है तो बस निजी क्षेत्र की ओर जाएं। यदि आप कम वेतन के साथ भी शांति से जीवन जीना चाहते हैं, तो सरकारी नौकरी चुनें क्योंकि सरकारी विभाग में कोई लक्ष्य या बड़ी परियोजना नहीं होती है और न ही ऐसे कोई बड़े मुद्दे होते हैं, क्या आप देर से चल रहे हैं, हालांकि, आप निजी तौर पर ऐसी उम्मीद नहीं कर सकते हैं। नौकरी, जहां कार्य कुशलता और गति वास्तव में योग्य हैं। सरकारी नौकरी का मुख्य लाभ मन की शांति है जबकि नुकसान में वेतन, शालीनता, अवांछित नौकरी के स्थान, उच्च नौकरशाही आदि शामिल हैं। आपकी निजी क्षेत्र की नौकरी में, सब कुछ आपके प्रदर्शन पर आधारित है, आप धीमी गति से काम करना चुनते हैं तो आपका बोनस भी उसी गति से आता है, हालाँकि, यदि आप अपने काम में तेज हैं, तो आपकी पदोन्नति भी होती है। निजी क्षेत्र में आपकी मेहनत सीधे तौर पर आपके विकास पर निर्भर करती है। निजी नौकरी का मुख्य नुकसान अत्यधिक कार्यसूची और बॉसवाद हो सकता है, लेकिन अंत में इसका लाभ मिलता है, यदि आप कार्यभार ले सकते हैं तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि कंपनी आपके लिए सब कुछ करेगी।ओ कृपया बदले में आपको। जब भी किसी को कोई अच्छा ऑफर मिलता है तो उसे आसानी से नौकरी बदलने की आजादी होती है। निजी क्षेत्र में आपका विकास हमेशा आपके हाथ में है। अंततः, यह व्यक्ति की मनःस्थिति ही है जो किसी भी कार्य को अच्छा या बुरा बनाती है। भगवान ने हर व्यक्ति को अलग-अलग स्वभाव और विशेषताओं के साथ बनाया है, जो चीज मेरे लिए उपयोगी है वह आपके लिए बेकार हो सकती है या इसके विपरीत। इसलिए किसी एक विकल्प को चुनने से पहले व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमता पर गौर करना होगा। सरकारी और प्राइवेट नौकरियों के फायदे और नुकसान सरकारी नौकरीः सरकारी नौकरी के विभिन्न फायदे और नुकसान हैंः लाभ स्थिरता FLEXIBILITY पेंशन जैसे लाभ नौकरी की सुरक्षा काम या अध्ययन से इतर समय ढेर सारी छुट्टियाँ तुलनात्मक रूप से कम दबाव लम्बी अवधि की नौकरी नुकसान धीमी वृद्धि कम वेतन कमाई की संभावना सीमित नियंत्रण का निम्न स्तर आलसी कार्य वातावरण कड़ी मेहनत का कोई मूल्यांकन नहीं कठिन चयन प्रक्रिया सरकारी नौकरीः प्राइवेट नौकरी के विभिन्न फायदे और नुकसान हैंः लाभ तेज चयन प्रक्रिया ज्यादा तनख्वाह त्वरित विकास का अवसर कड़ी मेहनत का मूल्यांकन तेज गति वाली कार्यशैली काम करने का अच्छा माहौल आपका काम ही आपका विकास तय करता है नुकसान कठिन प्रतियोगिता नौकरी की कोई सुरक्षा नहीं बढ़िया काम का बोझ काम का समय काफी ज्यादा है कोई पेंशन या ऐसा कोई लाभ नहीं बहुत कम छुट्टियाँ सरकारी नौकरियों के प्रति उम्मीदवारों को क्या प्रभावित करता है? सरकारी नौकरियों ने हमारे देश में नौकरी की तलाश कर रहे अधिकांश उम्मीदवारों को हमेशा प्रभावित किया है। परंपरागत रूप से, सरकारी नौकरियों को भी सुरक्षित माना जाता है, जिसमें नौकरी छूटने का कोई खतरा नहीं होता है या बहुत कम होता है, खासकर जब निजी क्षेत्र में नौकरी के अवसर नहीं थे। साथ ही सरकारी वर्ग के अंतर्गत मंदी के कारण नौकरी जाने का डर भी नहीं रहता है। एक समय था जब हमारे देश में केंद्र और राज्य दोनों सरकारें सबसे बड़ी नियोक्ता थीं। -निरंतर

सच्चे श्रदान से ही परमात्मा की प्राप्ति संभवः आर्यिका विज्ञाश्री माताजी

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगंबर जैन मंदिर वरुण पथ मानसरोवर के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की 22 वी वर्षगांठ के पावन अवसर पर परम पूज्या गणिनी आर्यिका गुरु मां विज्ञाश्री माताजी के पावन सानिध्य में भगवान महावीर मंडल विधान का आयोजन किया गया। आयोजन से पूर्व परम पूज्य गुरु मां ने उपस्थित जन समुदाय को मंगल आशीर्वाद देते हुए कहा की भगवान की भक्ति में जब तक श्रद्धान पूर्ण रूप से नही हो फल की प्राप्ति नही होती इसलिए केवल थाली में अर्घ चढ़ने को ही आप पुण्य ना समझे पुण्य की प्राप्ति के लिए आपको अतिरिक्त श्रम की आवश्यकता है और आपका कल्याण भगवान की सच्ची आराधना आस्था त्याग के बलबूते पर ही हो सकता है अन्यथा आप अपना जीवन व्यर्थ कर रहे हैं तीर्थंकरों की आराधना से आपके जीवन का कल्याण संभव है लेकिन आपको सही दिशा का बोध कराने वाला गुरु आपके जीवन में होना चाहिए और यह वरुण पथ का सौभाग्य है की वरुण पथ की समाज जो भी कार्यक्रम आयोजित करती है गुरुओं का सानिध्य मिलता रहता है । श्री श्री 1008 भगवान कुंथुनाथ जी के मोक्ष कल्याण के पावन अवसर पर निर्वाण लाडू परम पूज्य गुरु मां के सानिध्य में अर्पित किया गया। भगवान महावीर मंडल विधान के आयोजन से पूर्व मूल नायक भगवान महावीर एवं तीनों वेदियों पर अभिषेक एवं शांति धारा करने का सौभाग्य वीरेश श्रीमती नीता नितेश अमीषा तारूश काव्यांश टीटी परिवार चंदा देवी महेंद्र कासलीवाल सतीश मंजू कासलीवाल सुरेंद्र सोनल जैन हनुमान नीलम गंगवाल एमपी जैन बीएसएनल श्रीपाल बड़जात्या को प्राप्त हुआ। विधान का निर्देशन प्रतिष्ठाचार्य प्रदुम्न जी शास्त्री ने किया। भगवान महावीर मंडल विधान का सौधर्मे इंद्र बनने का सौभाग्य पूरणमल श्रीमती ललिता देवी अनोपडा एवं कुबेर राजेंद्र अर्चना सोनी को प्राप्त हुआ । इस अवसर पर एमपी जैन, ज्ञान बिलाला, विनेश सोगानी, राकेश चांदवाड, अनिल दीवान, अरविंद गंगवाल, अजीत जैन , सतीश कासलीवाल,जेके जैन, संतोष कासलीवाल,निर्मल शाह आदि ने अपनी गरिमामई उपस्थिति प्रदान की ।

कुन्थुनाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक श्रीमती सुशीला पाटनी आदी के सानिध्य में धुलियान में मनाया गया...

धुलियान मुर्शिदाबाद. शाबाश इंडिया

पश्चिम बंगाल ताः08.05.2024 को कुन्थुनाथ भगवान का जन्म-तप-मोक्ष कल्याणक के दिन मुर्शिदाबाद जिला के मंदिर दर्शन करने आए ग्रुप में श्रीमती शुशीला पाटनी किशनगढ़, श्रीमती शीला जैन जयपुर, श्रीमती मंजू जैन जयपुर, श्रीमती प्रेमलता जैन जयपुर, श्रीमती स्वेता जैन अहमदाबाद, श्रीमती सुधा जैन गौहाटी, श्रीमती मंजु जैन डिब्रूगढ़, श्रीमती हीरा जैन गौहाटी, श्रीमती मंजु जैन गौहाटी व सुश्री देशना जैन जयपुर के सानिध्य में हर्षोल्लास के साथ निर्वाण लड्डु चढ़ाया गया। आगत अतिथियो को धुलियान समाज द्वारा सम्मानित किया गया, धुलियान मंदिर दर्शन के बाद दोपहर को वे आज अरगांबाद जंगीपुर गनकर सन्मतिनगर मंदिर दर्शन करने गए अगले दिन बरहमपुर जियागंज लालगोला पाकुड़ आदी मंदिर के दर्शन करेगें तथा उसके बाद दिन सामुहिक विधान धुलियान में होना है। मुर्शिदाबाद जिला की एकता व आत्मीयता देख आगत गदगद हो गये। **-संजय बड़जात्या**

आचार्य शशांक सागर जी द्वारा अक्षय तृतीया पर पिच्छिका परिवर्तन के समारोह का हुआ पोस्टर विमोचन

तीर्थंकर कुँथू नाथ भगवान का मनाया गया मोक्ष कल्याणक

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर जैन मन्दिर में अक्षय तृतीया के सुअवसर पर आचार्य श्री शशांक सागरजी मुनिराज का अवतरण दिवस एवं संघ के पिच्छिका परिवर्तन समारोह के पोस्टर का विमोचन किया गया। प्रबंध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया कि समारोह का पोस्टर सर्वप्रथम मूलनायक नेमिनाथ भगवान को ,सानंद कार्य संपन्न हो इस भावना के साथ अर्पित किया गया तथा बाद में आचार्य श्री के सानिध्य में पोस्टर विमोचन किया गया। अक्षय तृतीया के दिन प्रात अभिषेक शांतिधारा के बाद साज बाज के साथ अक्षय तृतीया पूजन एवं गुरु पूजन की जाएगी तथा संघ का पिच्छिका परिवर्तन होगा। कार्यक्रम के बाद श्रद्धालुओं के लिए इक्षु रस की व्यवस्था की गई है ।शाम को भक्तामर दीप अर्चना होगी।

कुन्थुनाथ का मोक्ष कल्याणक

इसके पूर्व मन्दिर में प्रातः अभिषेक वृहत शान्तिधारा व पूजन के बाद निर्वाण काण्ड का वाचन किया गया तथा इसके बाद कुन्थुनाथ भगवान के मोक्ष कल्याण का अर्घ-सुदी वैशाख सु

एकम नाम, लिया तिहि द्यौस अभय शिवधाम
जज हरि हर्षित मंगल गाय, समर्चतु हौं तुहि मन-वच-काय

बोलते हुए निर्वाण लाडू जयकारों के साथ समर्पित किया गया ।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा में निर्वाण लाडू चढ़ाया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभजी ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि बैसाख शुक्ला प्रतिपदा बुधवार दिनांक 08.05.2024 को भगवान कुंथुनाथ जी के जन्म तप एवम्-मोक्ष कल्याणक के पावन दिवस पर भक्ति भाव से अर्घ्य समर्पित करते हुए श्री दिगम्बर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुर्गापुरा जयपुर में श्रद्धालुओं ने मोक्ष कल्याणक का निर्वाण लाडू चढ़ाया।

महिला महासमिति संभाग चाकसू ने परिंडे लगाये

चाकसू. शाबाश इंडिया। पर्यावरण परिवर्तन के कारण गर्मी बढ़ने से बेजुबान पक्षियों की प्यास बुझाने और भूख मिटाने के लिए दिगंबर जैन महिला महासमिति संभाग चाकसू द्वारा आदिश्वर धाम जैन नसिया में पक्षियों के लिए परिंडा लगाने का कार्यक्रम रखा गया। पक्षियों के लिए परिंडा कार्यक्रम का शुभारंभ दिगंबर जैन महिला महासमिति राजस्थान की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला बिंदायका व शीला सेठी ने परिंडे वितरित कर उनमें दाना-पानी डालकर किया गया। कार्यक्रम में चाकसू महिला संभाग की अध्यक्षा रिचिका जैन, मंत्री रिंकल सोगानी, सुनीता तमड़िया, अनीता सोगानी,मगनमाला सोगानी,बबली जैन, शीनू सोगानी, मेघा लुहारा, संगीता चोकड़ायत एवं अन्य महिलाएं मौजूद थी। इस कार्यक्रम की जानकारी चाकसू संभाग की संरक्षक ऊषा सिंघल द्वारा दी गई। आदिश्वर धाम के मैनेजर नवल जी द्वारा समिति की पूर्ण रूप से सहायता की गई।

नमिनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया

बारां. शाबाश इंडिया। दिनांक 8 मई गुरुवार को संभावनाथ जिनालय पर 1008 नमिनाथ भगवान का निर्वाण लाडू चढ़ाया। सभी महिला पुरुष व बच्चों को समिति की तरफ से गन्ने का जूस पिलाया। मूक पक्षियों के लिए परिंडे बांधें। 8 मई बुधवार को 1008 कुंदनाथ भगवान का लाडू चढ़ाकर निर्वाण महोत्सव मनाया। दिनांक 10 मई शुक्रवार को अक्षय तृतीया भगवान आदिनाथ के प्रथम पारणा दिवस पर महिला महासमिति बारां संभाग द्वारा जैन जोड़ला मंदिर पर समाज तथा अन्य सभी सदस्यों को प्रातः 8 से 10 बजे तक गन्ने का जूस पिलाया जाएगा।

श्री अशोक-गरिमा जैन

सदस्य दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सन्मति

9 मई' 24

9782777713

की वैवाहिक वर्षगांठ पर

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

शुभेच्छु

अध्यक्ष: मनीष - शोभना लोंग्या

संस्थापक अध्यक्ष: राकेश - समता गोदिका

सचिव: राजेश - रानी पाटनी

कोषाध्यक्ष: दिलीप - प्रमिला जैन

सांस्कृतिक सचिव: कमल-मंजू ठोलिया

एवं समस्त सदस्य दिग. जैन सोशल ग्रुप सन्मति, जयपुर

भगवान कुन्थुनाथ के कल्याणक दिवस पर पूजा- अर्चना कर चढ़ाये निर्वाण लाडू

सनावद. शाबाश इंडिया। जैन धर्म के सत्रहवें तीर्थंकर भगवान कुन्थुनाथ स्वामी ऐसे तीर्थंकर हैं, जो हस्तिनापुर के चक्रवर्ती राजा थे लेकिन उन्हें आत्मज्ञान प्राप्त हुआ था। वैशाख कृष्ण अमावस्या को आपके जन्म, तप और मोक्ष कल्याणक एक साथ आते हैं । इस उपलक्ष्य में श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर, आदिनाथ जिनालय, शांतिनाथ मन्दिर में श्रद्धालुओं ने भगवान कुन्थुनाथ स्वामी की विशेष पूजन की। समाज के शुभम जैन ने बताया कि बुधवार को श्री सुपार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में संतोष बाकलीवाल द्वारा जलाभिषेक, शांतिधारा, के बाद भगवान कुन्थुनाथ स्वामी की विशेष पूजन कर जन्म तथा तप कल्याणक मनाया। डॉ नरेन्द्र जैन भारती हेमचंद पाटोदी, निलेश बाकलीवाल, चंदा पाटनी, विनीता बाकलीवाल, रेखा जैन ने मोक्ष गमन का प्रतीक निर्वाण लाडू चढ़ाया। शांतिनाथ जिनालय में संजय चौधरी, सलित जैन, नितेश जैन ने निर्वाण लाडू चढ़ाया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में नवनीत जैन, प्रदीप पंचोलिया, सुजाता जैन ने पूजन कर निर्वाण लाडू चढ़ाये। श्री आदिनाथ जिनालय में टीकमचंद भूच, नवीन भूच, पुष्पेंद्र जैन, नीरज जैन, कैलाश चौधरी, सावित्रीबाई जटाले, प्रिया जैन, वीनस जैन ने पूजा - अर्चना कर जन्म, तप और मोक्ष कल्याणक मनाया। डॉ नरेन्द्र जैन भारती ने बताया कि भगवान कुन्थु नाथ स्वामी का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को हस्तिनापुर के कौरववंशी काश्यपगोत्री राजा शूरसेन तथा पटरानी श्रीकांता के राजमहल में हुआ था, जो षट खंड पृथ्वी के चक्रवर्ती राजा हुए थे। लेकिन आत्मज्ञान होने पर तपस्या करने वन में चले गए। 16 वर्षों तक तपस्या के बाद आज के दिन आपको केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

जैन इंजीनियर्स सोसायटी जयपुर साउथ चैप्टर द्वारा सेवा कार्यक्रम आयोजित: महिला चिकित्सालय चांदपोल में भोजन वितरण

शाबाश इंडिया। जैन इंजीनियर्स सोसायटी जयपुर साउथ चैप्टर ने सामाजिक सेवा कार्य की श्रृंखला में एक और मोती पिरोते हुए दिनांक 8 मई, 2024 को महिला चिकित्सालय चांदपोल परिसर पर 100 से भी अधिक लोगों को भोजन वितरित किया । इनमें से अधिकांश लाभार्थी मरीज या उनके परिजन थे । इस सामाजिक सेवा कार्यक्रम में इंजी. पी सी छाबड़ा (जनरल सेकेट्री, जेस इंटरनेशनल फाउंडेशन), इंजी. देवेन्द्र मोहन जैन (ज्वाइंट सेकेट्री, जेस इंटरनेशनल फाउंडेशन), इंजी. दीपक कुमार जैन (चैप्टर अध्यक्ष), इंजी. अरूण कुमार जैन (चैप्टर उपाध्यक्ष-I), इंजी. राकेश कुमार बगड़ा (चैप्टर उपाध्यक्ष-II), इंजी. प्रदीप कुमार जैन (चैप्टर सचिव) इंजी. बी पी जैन (संयुक्त सचिव) एवं श्रीमती कुसुम जैन सम्मिलित रहे । सेवा कार्य में वित्तीय सहयोग इंजी. राकेश कुमार बगड़ा द्वारा किया गया ।

पुलक पर्व के तहत 50 यूनिट रक्तदान, मरीजों को फल फ्रूट वितरण

किशनगढ़, अजमेर. शाबाश इंडिया

भारत गौरव आचार्य पुलक सागर जी गुरुदेव के 54 वें अवतरण दिवस पर पुलक मंच परिवार किशनगढ़ द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय पुलक पर्व के तहत आज रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। पुलक मंच अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बैद एवं जीतू पाटनी ने जानकारी देते हुए बताया की जैन गौरव भामाशाह अशोक पाटनी ने आचार्य पुलक सागर जी गुरुदेव के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर मंच की प्राथना के साथ रक्तदान शिविर का शुभारम्भ किया। रक्तदान शिविर संयोजक अरविन्द बैद एवं सचिन अजमेरा ने बताया की शिविर मे 50 यूनिट रक्तदान किया गया रक्तदान करने वालों मे मंच अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बैद, मांगीलाल झांझरी, मुकेश पापड़ीवाल, हेमंत झांझरी, सचिन अजमेरा, अरविन्द बैद, राहुल गंगवाल, दिनेश गोधा, गजेंद्र गोधा, संजय कासलीवाल, अभिषेक बज, अनिल सेठी, गौरव पाटनी, पंकज पहाडिया, हर्षित झांझरी, मनीष बैद, राजकुमार बैद, अरुण बोहरा, महावीर सिंह, प्रवीन बैद, वैभव साहू महिला

वर्ग से शांति बड़जात्या, संगीता पापड़ीवाल, ओशिका अजमेरा, कांता मालाणी, राधिका मालाणी सहित 50 लोगों ने रक्तदान किया। फल फ्रूट वितरण प्रभारी मुकेश पापड़ीवाल एवं नरेश झांझरी ने बताया की यज्ञनारायण चिकित्सालय के सभी वार्डो मे उपचाररत्त मरीजों को पुलक मंच द्वारा फल फ्रूट वितरित किया गया। रक्तदान शिविर मे जैन गौरव अशोक पाटनी, विधायक डॉ विकास चौधरी, अजमेर cmho डॉ ज्योसना रंगा, यज्ञनारायण चिकित्सालय पीएमओ डॉ राजकुमार बोहरा, ब्लड बैंक प्रबंधक सोनिया मैडम, मुनिसुव्रतनाथ पंचायत के मंत्री सुभाष बड़जात्या, उपमंत्री राजेश पांड्या, आदिनाथ पंचायत के मंत्री विनोद चौधरी, उपमंत्री इंदरचंद पाटनी, सुभाष चौधरी, पार्षद सुशील अजमेरा के साथ मंच अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश बैद, राजकुमार दोसी, महामंत्री जीतू पाटनी, पूरन टोंग्या, कमल बैद, मुकेश पापड़ीवाल, नरेश झांझरी, प्रदीप गंगवाल, मांगीलाल झांझरी, जयकुमार दोसी, सुनील भानावत, पिन्टू पाटनी, राहुल गंगवाल, हेमंत झांझरी, अरविन्द बैद, अभिषेक बज, गजेंद्र गोधा, धर्मचंद पाटनी, विकास गंगवाल, संजय कासलीवाल, दिनेश गोधा, विनोद पाटनी, राजेश पाटनी, मनीष गंगवाल, अंकित सेठी, मुकेश कासलीवाल, महिला मंच अध्यक्ष संगीता पापड़ीवाल, सुलोचना कासलीवाल, शांति बड़जात्या, नीलू झांझरी, ओशिका अजमेरा, सपना भानावत सहित मंच के अनेक सदस्य उपस्थित थे।

मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज का दमोह में हुआ भव्य प्रवेश

विशाल शोभायात्रा के साथ स्थान-स्थान पर हुआ पाद प्रक्षालन, आज हमारे संघ के अग्रज निर्यापकश्रमण दय का हम दीक्षा महोत्सव मना रहे हैं : मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

दमोह. शाबाश इंडिया

आज मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज क्षुल्लक श्री गंभीर सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री वरिष्ठ सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विदेह सागर जी महाराज ससंघ का आज दमोह नगर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ जहां नगर को दुल्हन की तरह सजाया गया था स्थान स्थान पर भक्तों के समूह गुरुदेव की अगवानी करने पलक पांवड़े बिछाए खडे.थे मुनि संघ को मुख्य जिनालय में प्रवेश कराया गया।

दीपक जलकर भी जगत को प्रकाशित करता रहता है...

जहां धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने कहा कि कोई भी कार्य होता है कार्य एक व्यक्ति करता है लाभ बहुतो को मिलता है। दीपक एक होता है लेकिन ना जाने कितने लोगों की आंखों के अंधेरे को दूर कर देता है प्रकृति के द्वारा ऐसे कुछ सिद्धांत वनाये गये है कि शुभ कार्य कोई एक व्यक्ति करता है और उसकी अनुमोदन करके सैकड़ों लोग पुण्य अर्जित कर लेते हैं कोई भी कार्य प्रशंसनीय इसलिए नहीं है कि आप ने किया है प्रशंसनीय तव होगा जव उससे बहुत सारे लोगों को लाभ हुआ हो अमावस्या को दीक्षा महोत्सव के रूप में मना रहे हैं भगवान को मोक्ष हुआ उनको लाभ हुआ और दीक्षा दिवस मना कर आज तक लाभ ले रहे हैं आज हमने अच्छा कार्य किया है लाभ कितनों को लाभ मिला

निर्यापक श्रमण दय के दीक्षा दिवस होगी महा आरती: विजय धुर्रा

मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने कहा कि आज परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री योगसागरजी महाराज निर्यापक श्रमणमुनि श्री नियमसागरजी महाराज का हम सब परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में भव्य दिवस मना रहे हैं शाम को जिज्ञासा समाधान के वाद परम पूज्य निर्यापक श्रमण की दीक्षा दिवस पर भव्य आरती उतारी जायेगी इसके पहले मुनिश्री के पास प्रक्षालन का सौभाग्य कुंडलपुर तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष चन्द्र कुमार अमित कुमार सर्राफ डी को परिवार को मिला इसके साथ ही शास्त्र भेंट करने का भी सौभाग्य प्राप्त किया इस दौरान कमेटी के प्रमुख नवीन निराला ने मुनि पुंगव से दमोह नगर में ग्रीव्स कालीन वाचना का निवेदन किया इस दौरान समाज के प्रमुख जनों ने श्री फल भेंट किए।

जिसने तुम्हारा नाम लिया है उसका जीवन धन्य हुआ है

जिसने तुम्हारा नाम लिया है उसका जीवन धन्य हुआ है अमावस्या को कोई खुशी नहीं मनाता लेकिनअमावस्या को भी भगवान महावीर ने दीवाली वना दिया आज के दिन हमारे अग्रज निर्यापक श्रमण श्रीयोगसागर जी महाराज निर्यापक श्रमण श्री नियम सागर जी महाराज ने आज दीक्षा लेकर आज के दिन को शुभ वनी दिया अमावस्या को अशुभ ही मना गया है लेकिन इसीअमावस्या को महावीर ने धन्य कर दिया नेत्र हीन के लिए दीप का कोई महत्व नहीं है दीप की ज्योति से हमारी आंख को आनंद आये उस प्राकाश से जगत प्रकाशित होकर आनंद मनाये तव दीप की उपयोगिता जगत के लिए है दीपक स्वयं अधंकार में रहकर भी दुनिया को प्रकाशित करने के लिए जलता रहता है।

आपके उज्जवल भविष्य को देखने का थमार्मीटर दे रहा हूं

उन्होंने कहा कि आपको एक थमार्मीटर देता हूं कि सुखी व्यक्ति को देखकर कैसा लगता है, आपका सिर दर्द कर रहा है, नींद नही आ रही और बाजू में पड़ोसी खरार्टे ले रहा है तुम्हे कैसा लग रहा है? गर हमें बुरा लगता है तो बस यही हमारी जिंदगी का भविष्य है कि हमारा सिरदर्द कभी ठीक नही होगा। वही सिरदर्द होने से रोने की आवाज निकल रही, तुमने मुँह पकड़ लिया कि मुझे तो नींद नही आ रही लेकिन मेरे बाजू में एक पुण्यात्मा सो रहा है, इसके पुण्य का उदय है कंही मेरे पाप का उदय इसके पुण्य को न छीन ले, धन्यवाद दे रहे हो जाओ सुबह सुबह तक तुम्हारा सिर ठीक हो जाएगा अमीर को देखकर यदि तुम्हारे मन में आ गया मैं गरीब हूँ, पुण्यहीन हूँ लेकिन जैसे ही अमीर को देखा तुम्हे आ गया- आज शगुन हो गया क्योंकि जो मैं चाहता हूँ उसको पाने वाला मिल गया, ये शगुन हो गया। ये मन्दिर है क्या, मंदिर में जाकर बस एक ही खुशी है, मुझे कुछ नही मिला लेकिन भगवान सबकुछ पा चुके है, उनको देखकर जो हमे खुशी हुई, भगवान वो है, शगुन मेरा हो गया ।को दूखकर आपको कैसा लगता है यदि खुशी हो रही है तो आपका भविष्य उज्जवल है।

All INDIA LYNESS CLUB
Footprints
Swara
9 May' 24
Happy Birthday
ly Mrs Ruchi Sharma
9024425100
President : Nisha Shah
Charter president : Swati Jain
Advisor : Anju Jain
Secretary : Mansi Garg
PRO : Kavita kasliwal jain

50th ANNIVERSARY
09.05.2024
आदरणीय श्री शरद जी - श्रीमती मंजू जी गोदिका
को 50वी वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं एवम बधाई
शुभेच्छु: मुन्ना देवी, ज्योति, राजकुमार - पुष्पा गोदिका, संदीप,
सिद्धार्थ-आयुषी, रमेश चंद - इंदु गंगवाल, बुद्धिप्रकाश - लाली गोधा,
राजीव-प्रिती सेठी, अतुल - पूजा सेठी, मेहुल - शिवानी रारा
समस्त मित्रगण एवम समस्त गोदिका परिवार

प्रिय मित्र श्री अरविंद भंगड़िया
को जन्मदिन की
हार्दिक शुभकामनाएं एवम बधाई
शुभेच्छु
सुधीर-संगीता गोधा, राजेश - मंजू गंगवाल, प्रमोद-अंजू पाटनी,
अशोक-नीतू जैन 'कोटलर', सुशील-मनोरमा जैन, राजीव -
प्रिती सेठी, अनिल-संगीता गोधा, मनोज-अनिता सोगाणी
एवं समस्त मित्रगण
9 मई 2024

''माँ' तुझे प्रणाम...

पदमचंद गांधी, जयपुर
9414967294

'माँ' शब्द की व्याख्या करना आसान नहीं है क्योंकि यह शब्द इतना विशाल है कि देव लोक के देवता भी छोटे पड़ते है। इतना ही नहीं तीर्थंकर एवं इन्द्र भी उन्हें प्रणाम करते है। कोई भी धर्म ऐसा नहीं है जहां इनकी गाथा नहीं गायी गयी है। वेद, पुराण, कुरआन से लेकर बाइबिल इत्यादि हर ग्रंथ में मां का दर्जा सबसे ऊंचा माना है। क्योंकि उसकी वाणी में संगीत का स्वर होता है और स्वर में ईश्वर का दर्शन होता है। अबोध बालक जब मां बोलता है तो नारी का ममत्व जनंकृत हो जाता है, दुनियां की सारी खुशिया इस शब्द के आगे फीकी लगती है। बहुत ही सारभूत एवं गहरा शब्द है 'माँ'। वेदों में मां को पूज्या, स्तुति योग्य एवं आह्वान योग्य माना है। महाभारत में यक्ष ने जब युधिष्टर से पूछा कि 'भूमि से भी भारी कौन है?' तब युधिष्ठर ने जवाब दिया माता गुरूतरा भूमेः। अर्थात मां इस भूमि से भी कहीं अधिक भारी होती है। मनु ने तो यहां तक कहा है- दस उपाध्यायों के बराबर एक आचार्य, सौ आचार्यों के बराबर एक पिता और हजार पिताओं से अधिक गौरव एक माता होती है। वेदों में प्रार्थना की गयी है, मां रसमयी, स्नेहमयी और सन्तानों के हितार्थ समर्पण करने वाली होती है। वह त्यागमयी, सत्यमयी, दयामयी, क्षमामयी, सत्यमयी और धर्ममयी होती है। वही ऋग्वेद में एक ऋचा में प्रार्थना की जल के समान शुद्ध करने वाली माताएं हमारे अन्तः करणों को शुद्ध करे। ऐसी कामना की है। आदि शंकराचार्य कहते है-''कुपुत्रों जायते क्व चिदपि कुमाता न भवित।'' अर्थात पुत्र तो कुपुत्र हो सकता है पर माता कभी कुमाता नहीं हो सकती। तैत्तिरीयोपनिषद में कहा है - 'मातृ देवो भवः।' अर्थात माता देवी समान है। मार्यादा पुरूषोत्तम राम लंका जीतने के बाद राज्य सुख भोगने के प्रसंग में अनुज लक्ष्मण के प्रस्ताव को ठुकरा कर कहते है ''जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी'' अर्थात्जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर होते हैं। ''मात्वान पितृमानाचार्यवान पुरूषों वेद'' - कहता है इस संसार में तीन ही उत्तम है- शिक्षक, माता-पिता और गुरू तभी मनुष्य मानव बनता है। महर्षि दयानन्द लिखते हैः- वह संतान अति सौभाग्यशाली ही है जिनके माता-पिता धार्मिक और विद्वान है। जितना माता से सन्तानों के उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी अन्य से नहीं। इसलिए मातृमान वह होता है जिसकी माता गभार्धान से लेकर जब तक पूरा विधान होः तब तक सुशीलता का उपदेश करे। जिसमें गर्भस्थ शिशु को अच्छे संस्कार मिल सके। जैसे सुभद्रा-अर्जुन पुत्र अभिमन्यु को मिले। मां की महानता को इसाई धर्म में बताते हुए परमेश्वर पिता मूसा के माध्यम से दस हुक्म दिए थे जिसमें पांचवा हुक्म है ''तू अपनी माता का आदर कर, जिससे तू दीघार्यु को प्राप्त करे। (व्यवस्थाविवरण-5:16) अगर इन्सान माता की सेवा करता है तो वह लम्बी उम्र तक जीवित रहता है।'' यशायाह 49:15 में परमेश्वर पिता कहते है, ''क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूध पिए हुए बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे। बाइबल के नीति वचन 23:22 में लिखा है। अपने जन्माने वाले की सुनना और जब तेरी माता बुढ़ियां हो जाये तब भी उसे तुच्छ न जानना। लेकिन आज जवान बच्चे माता को तुच्छ समझ कर उनका उपहास करते है। यह महा पाप है। माता का अपमान करने वालों के लिए नीति वचन 30:17 में बड़ी सख्ताई से लिखा है- जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने उस आंख को ताराई के कौवे खोद खोद कर निकालेगें। इतना आदर मां के प्रति बाइबल में लिखा गया है। कुरआन में लिखा है मां के कदमों के तले जन्नत है। कुरआन में सूरह अहफाफ आयत 15 में स्पष्ट किया है, हमने इन्सान को आदेश दिया है कि अपने मां बाप के साथ नेक बर्ताव करे उसकी मां ने बहुत कष्ट उठाकर उसे अपने पेट में रखा और बहुत तकलीफ उठाकर ही उसे जन्म दिया। मुहम्मद साहेब से एक व्यक्ति ने पूछा इन्सानों में मेरे अच्छे बर्ताव से सबसे ज्यादा हकदार कौन है- मुहम्मद साहब ने कहा तेरी मां। फिर उसने पूछा इसके बाद उत्तर मिला तेरी मां फिर उसने पूछा इसके बाद कौन है फिर कहा तेरी मां फिर पूछा इसके बाद कौन है फिर कहा तेरे पिता अर्थात हदीस की रोशनी में मां का स्थान पिता के मुकाबले तीन गुणा ऊंचा है। मुहम्मद साहब ने एक और हदीस में फरमाया मैं वसीयत करता हूं इनसान को मां के बारे में कि वो उससे नेक बतार्व करे। मां का अनादर या उनकी बात न मानना और उन्हें कष्ट पहुंचाना बहुत बड़ा गुना है। यह इतना बड़ा गुना है कि ईश्वर की भक्ति और इबादत करने के बावजूद भी ऐसे व्यक्ति का जन्नत जाना बहुत मुश्किल होगा। एक हदीस में उन्होंने कहा है जन्नत मां के कदमों के नीचे है। मां के चरणों में जन्नत बसती है। मां के आंचल में संसार भर की खुशियां है। मां की गोद में बैठने के बाद जो सुकून मिलता है वह दुनियां में कहीं नहीं मिलता। संसार की सुन्दरता मां की खूबसूरती के सामने तुच्छ है। मां तो ममता की देवी है इसलिए सन्तान के लिए मां पहला मंदिर है क्योंकि मां के जन्मदाता के रूप में बह्मा, पालनकर्ता के रूप में विष्णु तथा विकास एवं उद्धार करने के लिए महेश तीनों रूप समाहित है। अगर कोई मां को देवी कहे लेकिन देवी तो सिर्फ वरदान ही देती है लेकिन मां ने तो सन्तान को जीवनदान दिया है। इसलिए वह तो देवी भी बड़ी है। मां की महिमा क्या करें वह तो महिमा से भी उपर है, और उसे उमपा भी क्या दें? क्योंकि ह्यउपह्य में भी मां समाहित है। अगर कोई उसे सागर कहे तो उसका जल भी खारा है लेकिन मां का दूध तो अमृत जैसे मीठा है। अतः सागर भी उसके सामने फीका है। अगर उसे चन्द्रमा जैसे कहे तो उसमें भी दाग है लेकिन मां की ममता में कभी दाग नहीं होता। अतः चन्द्रमा भी उसके सामने बोना है। अगर कोई से सूर्य की उपमा दे तो सूर्य केवल दुनियां को रास्ता दिखाता है लेकिन मां केवल रास्ता ही नहीं दिखाती वरन्अंगुली पकड कर चलना भी सिखाती है। अतः सूर्य उसके आगे फीका है। मां की ममता दस बच्चों में बंटकर भी खण्डित नहीं होती क्योंकि उसके हाथ जब भी उठते हैं वे ममता के ही होते है। क्योंकि वह मां है। ममता की भूख है। मां की खुशी तो इसमें है कि उसकी संतान सुखी रहे। बस सन्तान की आंखों में पानी होना चाहिए। मां का ध्यन बेटे के शरीर पर जाता है कि वह स्वस्थ्य है कि नहीं परन्तु पत्नी का ध्यान पति की कमाई पर जाता है जब कि दोनों स्त्री है। मां के ऋण से कभी कोई उऋण नहीं हो सकते। कहते है ममता अपना मोल नहीं मांगती। अकबर के दरबार में टोडरमल ने मां का ऋण चुकाना चाहा लेकिन एक रात मां को सहन नहीं कर पाया। मदर्स डे पर बेटे मां को कुछ देना चाहते है पर क्या भौतिक वस्तुएं उस ममता का ऋण चुका सकते है- नहीं! मां हर समय दुआ मांगती है कि बच्चे सुखी रहे उन्हें कष्ट न हो। ममता छीजती नहीं है। मां के लिए कोई एक दिन निर्धारित नहीं हो सकता तीन सौ पैंसठ दिन उसके लिए कम है। सदैव ध्यान रखने की बात है कि भूल से भी मां को धन्यवाद नहीं कहा जाये वरन उसका आभार प्रकट करे। तरीका चाहे कोई भी हो मां को तो उपहार भी नहीं चाहिए, क्योंकि जन्म देने के बाद वह सदैव देने की भूमिका में ही रहती है। चाहे वह आशीश ही क्यों न हो। मां के चरणों में सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा-

वो अहसास हो तुम जो कोमल लगता है
वो स्पर्श हो तुम जो शीतल लगता है।।
तुम्हे पाकर ये जहां पा लिया मैने
तुम्हारे न होने से हर पल निर्थक लगता है।।